देवशयनी एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Devshayani Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — full chapter 53, controlling revision 336434. Also compared: Wikisource revision API — full exact controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 53 — whole electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 53 — full English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.53.1–37, Sanskrit Wikisource revision 336434, not a transcription of the original text.

शयनी का नाम और युधिष्ठिर के प्रश्न

KATHA 6.53.1–10

युधिष्ठिर आषाढ़ के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम और विधि पूछते हैं। कृष्ण इसे शयनी कहते हैं और स्वर्ग, मुक्ति तथा पाप-क्षय से जोड़ते हैं। वे इसका सुनना वाजपेय यज्ञ के फल से तुलना करते हुए कहते हैं कि सृष्टिकर्ता ने इसे पाप-क्षय के लिए बनाया। सुनने मात्र की महिमा भी कही जाती है।

विष्णु के भक्तों के लिए व्रत और आषाढ़ में वामन की कमलों से पूजा की प्रशंसा आती है। इसी आषाढ़ शुक्ल चर्चा में चयनित पाठ ‘कामिका’ नाम भी कहता है। कृष्ण समस्त जगत और तीन प्राचीन देवों के प्रसंग में हरि की एकादशी-पूजा की प्रशंसा करते हैं। यह नाम स्रोत की विशेषता है, अलग श्रावण कृष्ण कामिका की तिथि को यहाँ लाने का कारण नहीं।

युधिष्ठिर पूछते हैं कि भगवान क्यों सोते हैं, बलि के पास क्यों रहते हैं, भूमि पर शयन का क्या प्रसंग है और अन्य लोग क्या करें। आगे का उत्तर कथा और चातुर्मास का धार्मिक विवेचन है, प्रत्येक परिवार के लिए अनिवार्य विधान नहीं।

Yudhishthira asks the name and method of Ashadha's bright-fortnight Ekadashi. Krishna names Shayani and connects it with heaven, liberation and release from sin. Comparing hearing it with a Vajapeya sacrifice, he says the creator made it to remove sin and praises simply listening.

The account commends observance by Vishnu's devotees and worship of Vamana with lotuses in Ashadha. Within this same bright-fortnight discussion the selected text also uses Kamika. Krishna praises Hari's Ekadashi worship in relation to the whole world and three ancient gods. This name is a source feature, not grounds for moving the separate Shravana dark Kamika date here.

Yudhishthira asks why the Lord sleeps, why he stays with Bali, what sleeping on the ground means and what others should do. The reply is religious narrative and Chaturmas discourse, not a compulsory rule for every household.

वामन, बलि और विराट रूप

KATHA 6.53.11–24

कृष्ण त्रेता युग के दैत्यराज बलि को प्रतिदिन पूजा, यज्ञ और व्रत करने वाला भक्त बताते हैं। इन्द्र, देवगुरु और देवता मिलकर भगवान की स्तुति करते हैं। भगवान पाँचवें अवतार वामन के रूप में आते हैं। कथा उनके विराट रूप और वाक्छल का उल्लेख करती है; बलि सत्य पर स्थिर रहते हैं। शुक्र चेताते हैं कि सामने नारायण हैं।

वामन साढ़े तीन पग भूमि माँगते हैं और बलि उनके हाथ में संकल्प का जल अर्पित करते हैं। विराट रूप में उनके चरणों से भूर्लोक, घुटनों से भुवर्लोक, कमर से स्वर्लोक, उदर से महर्लोक, हृदय से जनलोक, कंठ से तपोलोक और मुख से सत्यलोक का संबंध कहा जाता है; सिर उससे ऊपर है। चन्द्र, सूर्य, ग्रह और तारे भी इस विश्वरूप में आते हैं। इन्द्र और देव, नाग, यक्ष, गन्धर्व और किन्नर वैदिक स्तुति करते हैं।

बलि का हाथ पकड़कर तीन पग पृथ्वी को भर लेते हैं। शेष आधा पग चयनित संस्कृत में बलि की पीठ पर रखा जाता है; अंग्रेज़ी तुलना में सिर कहा गया है। यहाँ पीठ का पाठ रखा गया है। बलि रसातल भेजे जाते हैं। उनकी नम्रता से जनार्दन प्रसन्न होते हैं और आषाढ़ शुक्ल के प्रसंग में फिर कामिका नाम आता है।

यह ब्रह्माण्ड-रूप और देव–दैत्य संवाद धार्मिक कथा हैं। वाक्छल छल करने की अनुमति नहीं, और बलि का प्रसंग किसी व्यक्ति पर अपमान या बलप्रयोग का निर्देश नहीं। प्रचलित तीन पग या सिर वाला रूप चुपचाप इस चयनित पाठ में नहीं मिलाया गया।

Krishna describes Bali, the daitya king in Treta, as a devotee performing daily worship, sacrifices and vows. Indra, the gods' teacher and the gods praise the Lord together. The Lord appears as Vamana, the fifth incarnation. The account mentions his cosmic form and verbal deception; Bali remains committed to truth. Shukra warns that this is Narayana.

Vamana requests three-and-a-half steps of land, and Bali places the vow's water in his hand. In his cosmic form the feet correspond to Bhurloka, knees to Bhuvarloka, waist to Svarloka, belly to Maharloka, heart to Janaloka, throat to Tapoloka and face to Satyaloka; the head lies above. Moon, sun, planets and stars enter this form. Indra and the gods, nagas, yakshas, gandharvas and kinnaras offer Vedic praise.

Taking Bali by the hand, the Lord fills the earth with three steps. The remaining half-step is placed on Bali's back in the selected Sanskrit; the English comparison says head. This adaptation retains back. Bali is sent to Rasatala. Janardana is pleased by his humility, and Kamika again appears in the Ashadha bright-fortnight context.

The cosmic form and divine dialogue are religious narrative. Verbal deception is not permission to deceive, nor is Bali's episode an instruction to humiliate or use force against anyone. The familiar three-step or head version is not silently blended into this edition.

दो रूप, शयन और चातुर्मास

KATHA 6.53.25–34

भगवान का एक रूप बलि के साथ रहता है; दूसरा क्षीरसागर में शेष की पीठ पर आने वाली कार्तिकी तक शयन करता है। बीच के समय में धार्मिक आचरण का विवेचन आता है। एकादशी और चार महीनों के पालन को श्रेष्ठ गति से जोड़ा जाता है। शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले भगवान की पूजा तथा जागरण की प्रशंसा है। उसका पुण्य ब्रह्मा भी नहीं गिन सकते, ऐसा कहा जाता है। प्राचीन ‘श्वपच’ पद के उल्लेख के साथ भी भगवान के लोक में प्रिय होने, भोग और मुक्ति की प्रशंसा है; अंग्रेज़ी तुलना का चाण्डाल पद यहाँ चुपचाप नहीं रखा गया।

दीप, पलाश-पत्र में भोजन और भूमि पर सोने की प्रशंसा आती है। पाठ श्रावण में शाक, भाद्रपद में दही, आश्विन में दूध और कार्तिक में द्विदल के त्याग का वर्णन करता है। द्विदल को यहाँ दालों के प्रसंग में रखा गया है, हर अनाज पर निषेध नहीं बनाया गया। इसके स्थान पर ब्रह्मचर्य पालन से श्रेष्ठ गति की प्रशंसा भी है।

ये चयनित अध्याय के कथन हैं, चार महीने की अनिवार्य भोजन-सूची, नींद रोकने या भूमि पर सोने का निर्देश नहीं। प्राचीन सामाजिक पद भेदभाव का आधार नहीं। भोजन, पानी, विश्राम और आवश्यक उपचार जारी रखें। दीप जलाएँ तो निगरानी रखें और जाने या सोने से पहले बुझाएँ। धार्मिक फल को स्वास्थ्य या मुक्ति की निश्चित गारंटी न समझें।

One form of the Lord stays with Bali; another rests on Shesha's back in the ocean of milk until the coming Kartiki. The intervening period brings a discussion of religious conduct. Ekadashi and four-month observance are associated with the highest destination. Worship of the Lord bearing conch, discus and mace and a vigil are praised, with merit said to exceed even Brahma's counting. Enjoyment, liberation and being dear in the Lord's world are praised even for a person described by the ancient label shvapacha; the English comparison's chandala is not silently substituted.

Lamps, meals on Palasha leaves and sleeping on the ground are praised. The text describes avoiding greens in Shravana, curd in Bhadrapada, milk in Ashvina and dvidala in Kartika. Dvidala is retained in its pulse context, not made a ban on every grain. Alternatively, celibate observance is praised as leading to the highest destination.

These are statements in the selected chapter, not a compulsory four-month diet or instructions to lose sleep or sleep on the ground. Ancient social labels do not justify discrimination. Food, water, rest and necessary treatment continue. Attend any lamp and extinguish it before leaving or sleeping. Religious rewards are not guaranteed health or liberation.

गृहस्थ-वचन और पूरा समापन

KATHA 6.53.35–37

कृष्ण व्रत को सदा स्मरण रखने और न भूलने का उपदेश देते हैं। चयनित पाठ गृहस्थ के लिए शयनी से बोधिनी के बीच की कृष्ण पक्ष एकादशियों का विशेष उल्लेख करता है और अन्य कृष्ण एकादशियों के बारे में निषेध कहता है। यह इसी स्रोत का विधान है, सभी परंपराओं का कैलेंडर-नियम या अन्य व्रतों को मिटाने का कारण नहीं।

अन्त में इस कथा को सुनने का फल अश्वमेध यज्ञ के समान कहा जाता है। अलग समापन-वाक्य अध्याय 53 को उत्तरखण्ड के उमा–महेश्वर संवाद में नाम देता है; तत्काल प्रश्नोत्तर कृष्ण–युधिष्ठिर का है। यहाँ सभी 37 क्रमांकित स्थान और समापन का आशय पूरा हुआ।

यह चयनित अध्याय का संक्षिप्त मौलिक पुनर्कथन है, संस्कृत का अक्षरशः पाठ या हर लोकप्रिय कथा का संग्रह नहीं। सुनने का धार्मिक फल निश्चित सांसारिक परिणाम का वादा नहीं। वास्तविक वार्षिक तिथि और परंपरा के अंतर जुड़े उत्सव-पृष्ठ पर देखें; इस कथा से घड़ी का समय न निकालें।

Krishna advises remembering the vow consistently. The selected text singles out dark-fortnight Ekadashis between Shayani and Bodhini for a householder and prohibits other dark Ekadashis. This is source-specific advice, not a universal calendar ban or grounds for deleting other observances.

The closing passage compares hearing the account with an Ashvamedha sacrifice. A separate colophon names chapter 53 within the Uttara section's Uma–Maheshvara dialogue; the immediate exchange is Krishna–Yudhishthira. All 37 numbered positions and the closing statement are thus covered.

This is a condensed original retelling of the selected chapter, not a verbatim Sanskrit reading or every popular story. Hearing's religious reward does not promise definite worldly results. Actual annual dates and tradition differences belong on the linked festival hub; no clock time can be derived from this account.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Devshayani Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.53.1–37, revision 336434, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.